20. धरती की शान

स्वाध्याय

कवि की दृष्टि में सर्वाधिक महान कौन है ?

- कवि की दृष्टि मे सर्वाधिक महान मनुष्य है ।

आप क्या-क्या कर सकते है ?

- एक विधार्थी होने के नाते मै वे सारे काम कर सकता हु जो मेरे कार्य-क्षेत्र में आते है ।

अन्य जीवो से मनुष्य महान कैसे है ?

- अन्य जीवो से मनुष्य महान है । अन्य जीव अब भी बहुत पिछड़े है जबकी मनुष्य ने जल, थल और नर पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया है ।

धरती-सा धीर किससे कहा गया है ?

- धरती सा धीर मनुष्य को कहा गया है ।

'धरती की शान' कविता के रचयिता कौन है ?

'धरती की शान' कविता के रचयिता पंडित भारत व्यास है ।

'धरती की शान' कविता में कवि ने किन प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण किया है ? कैसे ?

- कवि ने कविता में पहाड़, नदिया, धरती, आकाश, हवा जैसे प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण किया है | कवि ने मनुष्य को असीम शक्तियों से संपन्न बताया है की मनुष्य चाहे तो पर्वतो को फोड़ सकता है | वह चाहेतों नदियो के प्रवाह को मोड सकता है | वह अगर ठान ले तो धरती और आकाश को जोड़ सकता है | मनुष्य पवन-सा गतिमान है | इसलिए वह आकाश में ऊंची-से ऊंची उड़ान भरने में समर्थ है |

प्रस्तुत कविता में मनुष्य के प्रति किस भाव की अभिव्यक्ति हुई है, और उससे हमें क्या प्रेरणा मिलती है ?

- प्रस्तुत कविता में मनुष्य को सर्वशक्तिमान बताया गया है | उसकी आत्मा परमात्मा का रूप है | दृष्टि से मनुष्य अजर-अमर प्राणी है | इससे हमे यह प्रेरणा मिलती है की मनुष्य होने के कारण हमे अपने लक्ष्य ऊंचे रखने चाहिए | हमे कीसी काम को पहचानकार कठिन-से-कठिन कार्य करने में पीछे नही हटना चाहिए | हमे निराशा का शिकार होकर अपनेआप को कभी अशक्त नही अनुभव करना चाहिए |

धरती की शान से कवि का क्या तात्पर्य है ? भाव स्पष्ट कीजिए |

- धरती की शान से कवि का तात्पर्य मनुष्य की गौरवपूर्ण उपलबधिया है | मनुष्य ने अपने बुद्धिबल से ऐसे अनेक कार्य कर दिखाए है, जो कभी असंभव माने जाते थे | मनुष्य ने सभ्यता और संस्कृति के ऊंचे आदर्श कायम किए है | उसने धरती पर के सभी प्राणियों में अपने को सर्वश्रेष्ठ साबित कर दिया है | इसलिए कवि मनुष्य को 'धरती की शान' मानता है |

मनुष्य के लिए कोई भी कार्य असंभव नही है |काव्य के आधार पर अपने विचार प्रकट कीजिए |

- मनुष्य अत्यंत समर्थ प्राणी है |वह चाहे तो पहाड़ो को फोड़ सकता है |वह चाहे तो नदियो के प्रवाह की दिशा बदल सकता है |वह मिट्टी से अमृत निचोड़ सकता है |इस प्रकार मनुष्य हर असंभव कारी को संभव बना सकता है |

'धरती की शान' कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए |

- 'धरती की शान' कविता में कवि ने मनुष्य को धरती का 'सर्वशक्तिमान प्राणी' बताया है |मनुष्य अपनी इन शक्तियों को नही पहचानता |इसलिए वह असहाय बन जाता है |सच यह है की मनुष्य महाकाल बन सकता है |उसकी आवाज युग बदल सकती है |वह चाहे तो ऊंची-से ऊंची उड़ान भर सकता है |इस प्रकार कविता का केन्द्रिय भाव मनुष्य को अपनी शक्तियों को पहचानने के लिए प्रेरित करना है |

निम्नलिखित कविता-पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए |

गुरु-सा मतिमान,

पवन-सा तू गतिमान,

तेरी नभ से भी

ऊंची उड़ान है रे |

- मनुष्य के पास बुद्धि की कमी नही है | उसके पास वृहस्पति जैसी प्रतिभा है | वह वायु जैसी गति रखता है | वह चाहे तो आकाश में ऊंचा उठ सकता है | कवि कहना चाहता है की यदि मनुष्य अपने अंदर छिपी शक्तियों को जाग्रत कर ले तो उसके लिए कुछ भी असंभव नही है |

निम्नलिखित कविता-पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए |

धरती की शान,

तू भारत की संतान,

तेरी मुट्ठियों में

बंद तूफान है रे |

- प्रत्येक भारतवासी महान है | उसमे अनंत शक्तिया छिपी हुई है | वह अपने आपमें तूफान जैसी शक्ति रखता है | वह चाहे तो उसकी उपलब्धिया धरती का गौरव बन सकती है |

समानार्थी शब्द

नभ –

भूचाल –

वाणी –

तूफान –

धीर –

अमृत –

हिम्मत –

निज –

हिमगिरि –

- नभ – आकाश
- भूचाल – भूकंप
- वाणी – वचन

- तूफान – कहर
- धीर – धैर्ययुक्त
- अमृत – सुधा
- हिम्मत – वीरता
- निज – अपना
- हिमगिरि – हिमालय

निम्नलिखित शब्दो के विमोल शब्द लिखिए |

अमृत –

अम्बर –

अमर –

धीर –

वीर –

पाप –

जीवन –

- अमृत – जहर
- अम्बर – धरती
- अमर – मर्त्य
- धीर – अधीर
- वीर – कायर
- पाप – पुण्य
- जीवन – मृत्यु

तू जो चाहे पर्वत पहाड़ो को....

A. मोड़ दे

B. फोड़ दे

C. तोड़ दे

D. जोड़ दे

- B.फोड़ दे

पृथ्वी के लाल तेरा हिमगिरि-सा ....

A. हाल

B. भाल

C. काल

D. मिसाल

- B. भाल

.... को तू जान, जरा शक्ति पहचान |

A. निज

B. स्वयं

C. खुद

D. स्व

- A.निज

तू जो अगर हिम्मत से .... ले,

A. ठान

B. जान

C. काम

D. पहचान

- C.काम

काव्य-पंक्ति पूर्ण कीजिए |

धरती .... महान है ||

धरती की शान तू भारत की संतान,

तेरी मुट्ठियों में बंद तूफान है रे,

मनुष्य तू बड़ा महान है ||

काव्य-पंक्ति पूर्ण कीजिए |

तू जो .... उड़ान है रे ||

तू जो अगर हिम्मत से काम ले,

गुरु-सा मतिमान, पवन-सा तू गतिमान,

तेरी नभ से भी ऊंची उड़ान है रे |